महर्षि दयानंद सरस्वती के शैक्षिक एवं सामाजिक विचारों का एक तात्विक विश्लेषण

प्रो. चंदना डे
विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग
ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय,लखनऊ

रजनी कांत दीक्षित
शोध छात्र
शिक्षाशास्त्र विभाग
ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्विद्यालय, लखनऊ

सार
महर्षि दयानंद एक महान दार्शनिक, शिक्षाविद एवं एक समाज सुधारक थे। उनका सबसे बड़ा योगदान आर्य समाज की स्थापना करना था जिसने शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में एक क्रांति की शुरुआत की । महर्षि दयानंद सरस्वती को भारत के सबसे महत्वपूर्ण सुधारक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व के रूप में जाना जाता है। दयानंद सरस्वती के दर्शन को उनकी तीन प्रसिद्ध पुस्तकों सत्यार्थ प्रकाश, "वेद भाष्य भूमिका" और 'वेद भाष्य' से भी जाना जा सकता है। महर्षि दयानंद आर्य समाज के महान संस्थापक हैं, जो आधुनिक भारत की शिक्षा प्रणाली के इतिहास में एक अद्वितीय स्थान रखते हैं। जब भारत के शिक्षित युवा यूरोपीय सभ्यता का अनुसरण करने में लगे थे और भारतीय लोगों की प्रतिभा और संस्कृति पर कोई ध्यान दिए बिना भारत में इंग्लैंड के शैक्षिक विचारों को प्रसारित करने के लिए आंदोलन कर रहे थे तब महर्षि दयानंद ने साहसपूर्वक पश्चिम के सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक वर्चस्व का विरोध किया। वे सामाजिक बुराइयों जैसे मूर्तिपूजा, जाति व्यवस्था, कर्मकांड, भाग्यवाद, अनैतिकता, दहेजप्रथा आदि के खिलाफ थे। उन्होंने महिलाओं की स्वतंत्रता और शोषित वर्ग की प्रगति के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया। वेदों और हिंदुओं के वर्चस्व को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने इस्लाम और ईसाई धर्म का विरोध किया और अन्य संप्रदायों को हिंदू व्यवस्था में वापस लाने के लिए शुद्धि आंदोलन की वकालत की।

बीज शब्द- शिक्षा, संस्कृति, आर्य समाज, जाति व्यवस्था, कर्मकांड, राष्ट्रवाद, शुद्धि आन्दोलन

१. प्रस्तावना

महर्षि दयानंद एक महान शिक्षाविद्, समाज सुधारक और एक सांस्कृतिक राष्ट्रवादी भी थे। उनका सबसे बड़ा योगदान आर्य समाज की नींव थी जिसने शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में एक नए जनान्दोलन को जन्म दिया । उन्हें भारत में सबसे महत्वपूर्ण सुधारक और आध्यात्मिक गुरु के रूप में जाना जाता है। दयानंद सरस्वती के व्यक्तित्व में आर्य समाज आंदोलन का प्रतिविंब दिखाई देता है। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान सराहनीय है। डॉ. एस. राधाकृष्ण के अनुसार, "आधुनिक भारत के निर्माताओं में जिन्होंने लोगों के आध्यात्मिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और देशभक्ति की आग को जलाया है, मुझे उनमें महर्षि दयानंद का स्थान सर्वोपरि प्रतीत होता है।"